

पत्नौ भार्यापचारिणी । गुरौ शिष्यश्च याव्यश्च स्तेनो राजनि कित्विषम् ॥
M. 8, 317. von Jmd (nicht von sich) auf Jmd abstreifen: चित्रगुता म-
मार्जाय (sc. तस्य) भूर्जे KATHA. 72, 360. — 3) मर्जि = गतिकर्मन् NAIKH.
2, 14. zur Erkl. von मृग Nir. 13, 3.

— intens. मर्मज्यते, मर्मज्यमान (P. 7, 4, 91, V Artt.), मर्मजान्, मर्मज्यते
(Ait. Br.), मर्मजि (Vop. 20, 22), मर्मजतस् nom. pl., मर्मज् (so ist wohl auch
P. 7, 4, 65 st. मर्मज्य zu lesen), मर्मजत und जत, मर्मजिता (Vop.); wieder-
holt abreiben, — putzen u. s. w.; med. sich reinigen u. s. w. wie der
einfache Stamm: मर्मज्मा ते तन्वर् भूरि कृतः RV. 3, 18, 4. इमिन्डं मर्म-
जत वाजिनम् 1, 133, 4. गिरस्ते मर्मज्यते 9, 2, 7. देवस्य मर्मजतश्चाह चतुः 4,
2, 19. 13, 6, 2, 33, 4. ते मर्मजत दद्वंशो अद्रिम् 4, 1, 14. मर्मज्यते दिवः शि-
श्रुम् 9, 33, 5. यदी मर्मज्यते धियः 47, 4, 62, 13. 64, 17, 91, 2. 8, 92, 7. AV. 4,
8, 7. TBr. 1, 2, 2, 27. चतुषो मर्मज्यते Ait. Br. 3, 19. — Vgl. मर्मजेय.

— अनु entlang —, glattstreichen, glätten: अनु नो मार्ज् तन्वां यदि-
रिष्टम् AV. 6, 33, 3. VS. 2, 24. त्रिरेणामनुलोमानुमार्जि CAT. Br. 14, 9, 4,
20. KĀTJ. Çr. 2, 6, 32. Gobh. 1, 7, 27. KAUC. 1, 67. आस्त्राव्यानुमजेत् ÂÇV. Çr.
6, 9. लोमानुमार्जि P. 3, 1, 25. Sch. Vop. 21, 17. Suçr. 1, 42, 12. 2, 29, 2, 7.
गाण्डिवं चानुमज्य MBh. 8, 4537. जिह्वामुद्धर सर्वेषां (so v. a. bringe sie zum
Schweigen) परिमज्यानुमज्य च 12, 3042. — intens.: बाहू यदी अनुमर्मजा-
नो न्यङ्कुतानामन्वेषि भूमिम् die Arme wiederholt hinstreckend RV.
10, 142, 5.

— अप abstreifen, abwischen AV. 18, 4, 40. तया तदपमार्गाप मज्जहे 7,
63, 2. LĀTJ. 2, 12, 12. VS. 7, 12, 17. यूपशकलेनापमार्ज्यमृष्टः शण्ड इति
ÇAT. Br. 4, 2, 1, 14. 5, 2, 4, 14. 13, 8, 4, 4. KĀTJ. Çr. 9, 6, 3. 21, 4, 23. KAUC.
46. अपमज्यान् चास्त्रातो गात्रापमज्यपाणिभिः MĀK. P. 34, 52. एनो दि-
जानामपमज्यते M. 2, 27. Etwas von sich auf einen Andern (loc.) abstreif-
en: डुक्कृतं चात्मनो मर्षी रूप्यत्वेवापमार्जि वै Spr. 3386. — Vgl.
अपमार्जन.

— अभि 1) abwischen: मुखमभ्यपरिक्लिन्नं वस्त्रातेनाभ्यमार्ज्यत् R. 4, 6,
16. व्रणमभिमज्य प्रताप्य Suçr. 1, 16, 6. अभिमृष्ट gereinigt als Erkl. von
प्रमृष्ट beim Schol. zu MBh. 2, 656. — 2) bestreichen, salben: अस्य तैले-
नाङ्गानि सर्वाण्येवाभ्यमृतत MBh. 13, 1486; vgl. तेनोच्छिष्टेन गात्राणि
शिरश्वेवाभ्यमृतयत् (अनयति oder मृतयति salben Dhātup. 32, 119) 7426.

— अभ्यमज्यत ÇAT. Br. 14, 1, 1, 12 fehlerhaft für अभ्यमज्यत.

— अघ streichen, wischen: अघाघं प्रक्रमवमार्जि ÇAT. Br. 4, 1, 2, 22, 5,
5, 6. KAUC. 31. ÂÇV. Çr. 2, 3. धनुर्व्यामवमज्य (vgl. u. परि) MBh. 1, 5487. 7,
654. लेपमवमार्जि abwischen, wegwischen TBr. Comm. 2, 384, 8. pass.
in der Bed. des med.: स्नात्वा च नावमज्येत गात्राणि er wische sich den
Körper nicht ab MBh. 13, 5006. — Vgl. अवमार्जन.

— आ abwischen; wegwischen: विवर्णामज्य मुखं करेण MBh. 2, 2224.
आमज्य वतो रुचिचन्दनाङ्गम् ÇĀK. 161, v. 1. कृच्छ्रेण संस्तभ्य शुचः पाणि-
नामज्य नेत्रयोः sich die Thränen aus den Augen wischend Bṛāh. P. 1, 13,
3. नरा मय्यामज्यधम् (die Gaṅgā spricht) 9, 9, 5. आमृष्ट s. u. मर्ज् mit
आ. — intens. glätten: वासोवयो ऽवीनामा वासोसि मर्मजत् RV. 10, 26, 6.

— अया s. अयामार्ग fg.

— व्या abwischen, wegwischen: व्यामृष्टतिलकाः काश्चित् R. 5, 13, 34.

— उद् 1) hinausstreichen, aufwärtsstreichen, abwischen, ausputzen;
med. sich abwischen u. s. w.: यै ते मातोन्मार्जं ज्ञातायाः पतिवेदेनौ

V. Theil.

AV. 8, 6, 1. स रराडाडुदमृष्ट er wischte sich den Schweiß von der Stirn
TBr. 2, 1, 2, 1. दन्तिपातः केशा उन्मृष्टाः hinausgestrichen 2. KAUC. 38, 124.
ÇAT. Br. 2, 2, 2, 4. उर्ध्वं प्रक्रमुन्मार्जि aufwärtsstreichen 4, 1, 24, 2, 22. KĀTJ.
Çr. 9, 4, 37. ÇĀK. Çr. 4, 4, 2, 5. उन्मार्जि स्वाङ्गम् Suçr. 1, 109, 12. त्रिः प्राश्या-
पो हिरुन्मज्य so v. a. sich den Mund abwischend (spülend Str.) JĀG. 1, 20. उ-
न्मृष्ट verwischt, abgewischt: लेख्य 2, 91. कुशलवोन्मृष्टगर्भित् RAGH. 13,
32. अङ्गराग Spr. 43. उन्मार्जित gereinigt, blank gemacht PRAB. 81, 12.
10, v. 1. — 2) med. davontragen, empfangen (vgl. einstreichen, heraus-
schlagen und ähnliche Bilder; vgl. auch u. नि): कृशनावतो अत्यान्क-
तीवत् उदमृतत पञ्चाः RV. 1, 126, 4. उद्राधो गव्यं मजे 5, 32, 17. स्तोमं चेमे
प्रथमः सूरिरुन्मजे 10, 167, 4. तस्य ते भतीय तस्य त इदमुन्मजे TS. 3, 2, 2,
1. वयं उन्मज्जानः AV. 18, 3, 73. — Vgl. उन्मार्जन, उन्मज्जावमजा.

— समुद् ausfegen: वेदेन पुराडाशान्समुन्मार्जि KĀTJ. 32, 6.

— उप streichen, bestreichen, wischen TBr. 2, 1, 4, 4. ÇAT. Br. 2, 3, 1,
18, 19. नीचा पाणिना मध्यमे परिधौ प्रत्यगुपमार्जि 4, 1, 2, 23. वेदेन 14, 2,
4, 16. सुचम् KĀTJ. Çr. 4, 14, 20. 9, 4, 38. ÇĀK. Çr. 2, 9, 10.

— नि 1) reiben an, streichen, schmieren an (loc.), abwischen; med.
sich abwischen, — abreiben: न्यु शीर्षाणि मृष्टम् TS. 1, 6, 2, 1. रेतो गर्दभे
न्यमार्जि (vgl. aber auch 2.) 7, 1, 4, 2. परिधौ निमार्जि 6, 4, 2, 4. ÇAT. Br.
11, 3, 2, 4. 7. अतरेण भुवो निमृज्यात् (sic) 14, 9, 4, 5. स ऊवा न्यमृष्ट 2, 2,
4, 10. 6, 4, 36. 6, 6, 2, 1. 14, 1, 2, 5. KĀTJ. Çr. 4, 14, 20. 5, 9, 20. तुरतेजो
निमजेत् ÂÇV. GRH. 1, 17, 16. KAUC. 42. 50. 32. 34. 71. 86. प्रदेशिन्याः प-
र्वणी उत्तमे अक्षयित्वाष्टयोरभ्यात्मं निमार्जि ÂÇV. Çr. 1, 7, 2, 3. 6. Gobh.
2, 7, 19. तं रुस्तं निमृज्यात् abwischen M. 3, 216. सा (स्वर्धुनी) पतती नि-
मार्जि लोकत्रयम् reinigen Bṛāh. P. 8, 21, 4. नि भगाहं त्वयि मजे ich reinige
mich an dir TAHT. Up. 1, 4, 3. भस्म गृहीत्वा निमृज्य अङ्गानि संस्पृशेत् auf-
schmieren, auftragen Muir, ST. 4, 300, 11. — 2) Jnd (loc.) Etwas zu-
wenden, zuführen, hingeben; med. an sich nehmen, einziehen (vgl. u.
उद्): न्यमृताम् योषणां न मयै RV. 10, 39, 14. तौ देवा मंक्र्यायां वावृ-
धुराव्यमये निमृजते अघरे 122, 7. यज्ञं जनिती तन्वां नि मामृजः 63, 7.
60, 9. नि राधो अष्टयं मजे 5, 32, 17. जनीरेव पतिरेकः समनो नि मामृजे
पुर इन्द्रः सु सर्वाः 7, 26, 3. — In der Stelle अतरेषां नि मिमृतुमृष्टयः RV.
1, 64, 4 ist zu ändern मिमितुः (von म्यत्). — Vgl. निमृष्ट.

— निम् abwischen, auswischen, austilgen: नी रपासि मृततम् RV. 1,
34, 11. 137, 4. गोष्ठं मा निर्मृतम् TS. 1, 1, 40, 1. 42, 1. पञ्चनस्य निर्मृष्टः
KĀTJ. 29, 3. दैर्भः सुचम् KAUC. 3. 23. जिह्वा निर्मृजानः sich abwischend
23. दन्तिपां रुस्तं निर्मृजयति 80. स्वर्गं यतः पितुरुस्तं निर्मृष्टि दन्तिणम्
AV. 18, 4, 56. निर्मार्जं च गात्राणि गलत्स्वेदजलानि वै BRAHMA-P. in LA.
(II) 38, 3. रुधिरं रुस्तेर्मुखा निर्मृज्य तस्य हि MBh. 10, 487. निर्मृष्टराग Spr.
1627. — Vgl. 1. निर्मार्ग, निर्मार्गक fg.

— परा abwischen, reinwaschen: मुखमस्य परामृज्य जलक्लिन्नेन पाणिना
R. 4, 6, 1.

— परि rings abwischen, reiben, putzen; zurichten: त्रिपौ मज्जति प-
रि (könnte auch zu आवृतम् gehören) गोभिरावृतम् RV. 9, 86, 27. तं गृ-
हीत्वा परिमार्जि नेद्यवद्योतदिति ÇAT. Br. 4, 1, 2, 17. 2, 17. 11, 5, 2, 4. 7.
KĀTJ. Çr. 9, 4, 29. 5, 25. द्विः परिमृजीत Gobh. 1, 2, 8. लेपान् ÂÇV. Çr. 8, 14.
KAUC. 73. 133. कंसं वा मणिं वा परिमृज्य poliren Nir. 7, 23. — विस्फार्य
च धनुष्यन्ये व्याः परे परिमृज्य च (vgl. u. अघ) abwischend MBh. 7, 3089.